

मेरा गुप्त जीवन- 90

“ बाज़ार में घूमते वक्त मेरे दूर की दो लड़कियाँ मेरे पास आई और कहने लगी- सोमू यार तुम तो आजकल कॉलेज में छाए हुए हो.. जल्दी ही उन दोनों ने अपनी चूत चुदाई की मंशा जाहिर कर दी. ... ”

Story By: यश देव (yashdev)

Posted: Friday, October 30th, 2015

Categories: [जवान लड़की](#)

Online version: [मेरा गुप्त जीवन- 90](#)

मेरा गुप्त जीवन- 90

ट्रेन में शमा और रूबी की चूत चुदाई

इस तरह आगरा की वो रात समाप्त हुई और अगले दिन का प्रोग्राम केवल आगरा शहर घूमने का था तो जल्दी उठने की कोई बंदिश नहीं थी। मैं लड़कियों को उनके कमरों में छोड़ कर वापस आकर गहरी नींद में सो गया।

अगले दिन नाश्ता करके हम सब अलग अलग आगरा शहर घूमने के लिए निकल गए लेकिन हमारा ग्रुप एक साथ था, हम सब टैक्सी करके शहर के खास खास बाज़ारों में घूमने चल दिए।

जेनी मुझसे बहुत खुश थी और बार बार वो मेरे पास आने की कोशिश कर रही थी और जब भी अवसर मिलता वो मेरे पास आ जाती और अपने मुम्मों को मेरे बाजू के साथ स्पर्श करवा देती और यह मुझ को बहुत ही अच्छा लगता था।

मैं भी कोई मौका नहीं छोड़ता उसके चूतड़ों को हाथ लगाने में और उसकी रेशमी साड़ी पर मेरा हाथ उसके गोल गोल नितम्बों पर फिसल जाता था।

यह खेल बहुत ही चुपचाप चल रहा था।

सब लड़कियाँ एक चूड़ी वाले की दूकान पर जा कर रुक गई और चूड़ियाँ पसंद करने में लग गई, मैं जेनी के पीछे खड़ा होकर उसको चूड़ियों के रंगों के बारे में बता रहा था और हर बार मेरा लौड़ा जेनी के चूतड़ों में जाकर लगता था चाहे वो जाने या फिर अनजाने में ही हो लेकिन मैंने महसूस किया कि जेनी को यह अच्छा लग रहा था।

कुछ लड़कियाँ साड़ी की दूकान पर जाकर खड़ी हो गई और नए ढंग की साड़ियाँ देखने

लगी लेकिन पूनम बेचारी पीछे पीछे ही खड़ी रहती थी क्यूंकि मुझको लगता था कि उसके पास शायद पैसे नहीं थे।

मैं उसके पास गया और उसके कान में कहा- पूनम महारानी, जो पसंद हो वो खरीद लो, पैसों की फ़िक्र ना करो मैं हूँ ना ?

वो बोली- वो तो ठीक है, लेकिन तुमको तो चुकाने पड़ेंगे ना, आज नहीं तो कल, इसलिए जिस वस्तु के पैसे पास ना हों, उसकी कभी ना इच्छा करो, यह मेरी माँ ने मेरे कान में डाल रखा है। तो सोमू राजा, तुम बेफ़िक्र रहो, हमको जब ज़रूरत होगी तो ज़रूर मांग लेंगे।

मैं बोला- अच्छा तो ठीक है, तुम यहाँ से मेरी होने वाली दुल्हन के लिए तो साड़ी पसंद कर सकती हो न ?

पूनम बोली- तुम्हारी होने वाली दुल्हन ? कौन है ? कहाँ है ? बताओ तो सही ?

मैं उसके कान फिर बोला- मम्मी जी ने चुन रखी है ! तुम मेरा कहा मान कर उसके लिए एक सुंदर सी साड़ी चुन लो जो तुमको पसंद हो !

तब पूनम ने एक बहुत ही सुंदर साड़ी पसंद कर ली और मैंने उसके पैसे चुका दिए।

अभी थोड़ी दूर आगे गए होंगे कि दो अपने ही कॉलेज की लड़कियाँ भी मिल गई, उन्होंने मुझको घेर लिया, कहने लगी- सोमू यार तुम तो आजकल कॉलेज में छाए हुए हो और लड़कियों में खास तौर पर बहुत पॉपुलर हो रहे हैगो।

मैं भी बोला- यह कैसे कह रहे हैगो ? कौन सी लड़की के साथ में बहुत ही पॉपुलर हो रिया हैगो ?

पहले वाली लड़की बोली- अच्छी नक़ल लगा लेते हो सोमू... लेकिन मुख्य बात को टालो नहीं, कभी हमारे साथ भी तो पॉपुलर होकर देखो ना यार ?

मैं बोला- सच कह रही हो तुम ? अगर यह सच है तो आज रात में ट्रेन में पॉपुलर हो जाते हैं तुम्हारे साथ भी ! आप दोनों ने अपना नाम तो बताया ही नहीं ? बताओ बिना नाम के

कैसे पाँपुलर हो जा रहे हैगो ?

मेरी नकलबाज़ी से दोनों लड़कियाँ हंस पड़ी और बोली- मेरा नाम रूबी है और इसका नाम शमा है और हम दोनों तुम्हारे ही कॉलेज में इंटर के दूसरे साल में हैं।

मैं बोला- ठीक है, आज रात को ट्रेन में अपनी पाँपुलैरिटी का टेस्ट कर लेते हैं, क्यों ?

दोनों ने हंस कर कहा- ठीक है... लेकिन यह तो तुमने बताया नहीं कि इस टेस्ट में क्या करना होता है ?

मैं बोला- हम सब इस टेस्ट में एक दूसरे को कहानी और जोक्स सुनाते हैं और खूब हँसते खेलते हैं, बस यही होता है पाँपुलैरिटी टेस्ट।

दोनों के चेहरे लटक गए उदासी में और फिर रूबी बोली- लेकिन मैंने तो सुना था कि आपके साथ बहुत कुछ होता है ?

मैं अब मज़े लेने लगा था, मैंने बिल्कुल अनजान बनते हुए कहा- मेरे साथ बहुत कुछ क्या होता है ? यह नहीं बताया गया था आप सब को ?

रूबी बोली- यही मौज मस्ती !!

मैं बोला- अच्छा मौज मस्ती ? हाँ वो तो बहुत होता है हमारे साथ हम सब मिल कर खूब मौज मस्ती करते हैं जैसे कल कि रात ही हम 4-5 लड़के लड़कियों ने मिल कर छुपन छुपाई खेली थी फिर 'आई स्पार्ड' जैसी गेम भी खेली थी। आप खेलना चाहोगी हमारे साथ ये गेम्स ?

रूबी मेरे को घूर कर देखने लगी, शायद उसको शक हो गया था कि मैं उसके साथ मज़ाक कर रहा था।

तब शमा बोल पड़ी- हमने तो यह सुना है कि आप सब मिल कर सेक्स जैसी गेम्स भी खेलते हो ?

अब मैं गंभीर हो गया और बोला- मैं नहीं जानता, यह सब तुम को कहाँ से पता चला है

लेकिन अगर आप के मन में सेक्स जैसी किसी गेम को खेलने की इच्छा है तो साफ़ साफ़ कहिये न, यूँ घुमा फिरा कर कहने में क्या फायदा ?

तब रूबी बोली- आप का मतलब है कि आप सेक्स करने के लिए तैयार हैं ?

मैं बोला- आप अगर तैयार हैं तो मैं भी तैयार हूँ और वैसे भी आप जैसी सुन्दर कन्याओं को देख कर सब को हो जाये प्यार तब भला कौन कर सकता है इंकार ? अब बोलिए आप की क्या मर्जी है ?

शमा बोली- आपने तो सुना ही होगा कि 'शमा तो जलती है हर रंग में सहर होने तक...'

मैं बोला- आपका मतलब है कि आप रात से ले कर सुबह तक जलना चाहती है मेरे साथ ?

शमा ने चैलेंज भरी आवाज़ में कहा- क्या आप पूरी रात से लेकर सुबह तक शमा जला सकते हैं ?

मैं बोला- आप आजमा कर तो देखिये, ज़रा करके तो देखिये और हमसे करवा कर तो देखिये ? बोलिए क्या इरादा है ? जल्दी कीजिये मेरे साथ आई 5-5 शमाएँ इधर ही आने वाली हैं ।

रूबी ने उधर देखा जिधर पूनम, नेहा, जेनी, जस्सी और डॉली दूकान पर साड़ी देख रही थी ।

रूबी और शमा दोनों बोली एक साथ- हम तैयार हैं, बोलो क्या करना होगा ?

मैं बोला- मैं आप दोनों को एक 2 सीट वाला केबिन दिलवा दूंगा अगर आप आज रात ही शमा जलाना चाहती हों तो, नहीं तो लखनऊ जाकर देख लेंगे कब और कहाँ ?

शमा बोली- ठीक है, मैं शमा तो आज रात ही अपनी शमा जलाना चाहती हूँ और तुम रूबी कब और कहाँ बोलो ?

रूबी बोली- जब शमा जलेगी तो भँवरे तो आएंगे ही, एक आधा मेरे हिस्से भी आ जाए तो बहुत अच्छा है । मेरी भी हाँ है आज रात को शमा के साथ जलने की !

मैं बोला- आज रात को 11-12 के बीच में प्रोग्राम रख लेते हैं अगर दोनों शमा जलने के लिए तैयार हों तो !

दोनों एक साथ बोली- तैयार हैं मेरे मालिक, मेरे आका ।

मैं बोला- फिर मिलते हैं होटल में !

यह कह कर मैं पूनम के पास खड़ा हो गया और कुछ ही मिनटों में उसने कह दिया- सोमू, निकालो 200 रूपए तुम्हारी होने वाली बीवी की दूसरी साड़ी खरीदी है ।

मैंने झट से उसको 200 रूपए दे दिए और बाकी सब लकड़ियों ने भी कुछ न कुछ खरीदा था, सब लड़कियाँ खुशी खुशी से वापसी के लिए तैयार हो गई ।

होटल में लंच करके मैं तो बहुत ही गहरी नींद में सो गया और फिर शाम को उठा तो स्टेशन जाने की तैयारी शुरू हो गई और हम सब 8 बजे आगरा स्टेशन पर पहुँच गये और ट्रेन तो खड़ी थी, उसमें सामान भी रखवा दिया ।

जैसा कि आते समय केबिन बांटे थे, वैसे ही अब भी बाँट दिए लेकिन इस बार रूबी और शमा को एक अलग केबिन दे दिया था जो बिल्कुल मेरे साथ वाला केबिन था और बाकी लड़कियों को भी इसी तरह एडजस्ट कर दिया ।

मेरा दो सीट वाला केबिन सिर्फ मेरे अकेले के ही पास था क्योंकि एक लड़का जो अपने दादा दादी को मिलने गया था वो वापस नहीं जा सका क्योंकि वो बीमार हो गया था ।

मैं अपनी फ्रेंड्स को मिलने गया और पूछा- क्या प्रोग्राम है ?

तो सबने कहा कि वो बहुत थक चुकी हैं, आज रात का कोई प्रोग्राम नहीं है ।

थोड़ी देर मैं उनके पास बैठ कर अपने केबिन की तरफ वापस जाने लगा तो पूनम ने उठ कर मुझ को एक टाइट जफ़्फ़ी मार दी और मेरे होटों पर एक गर्म और जलती हुई किस कर दी, मैं भी उसको गोल गुदाज़ नितम्बों को थोड़ा मसलने लगा और फिर उसके मोटे मुम्मों की गर्मी महसूस करने लगा ।

तब नेहा बोली- बस करो पूनम अब बाकी घर जा कर लेना ।

अब जाने के लिए तैयार हुआ तो जेनी ने घेर लिया और फिर सब बारी बारी से मुझको चूमने और जफ़्फ़ी डालने लगी ।

वहाँ से निकला तो शमा और रूबी के केबिन में भी गया । दोनों ने सलवर सूट पहन रखा था, उन दोनों ने भी मुझ को घेर लिया और खूब चूमाचाटा और बाहों में भींचा, मैंने महसूस किया कि शमा ज़्यादा खूबसूरत थी, रूबी उससे थोड़ी कम थी ।

शमा के मुम्मे और नितम्ब मोटे और उभरे हुए थे, शमा ज़्यादा सेक्सी और फ्रैंक थी और रूबी ज़रा सोच समझ कर बात करने वाली थी ।

मैंने उनको धीरज रखने को कहा और फिर जल्दी से अपने केबिन में आ गया और थोड़ी देर बाद ही निर्मला मैडम मेरे केबिन में आ गई और बैठ कर बातें करने लगी ।

वो कह रही थी कि मैं कम्मो को याद दिला दूँ कि उनका काम अभी बाकी है और उस कार्यक्रम के बारे में वो उनसे फ़ोन पर बात कर ले ।

यह कह कर वो उठी जाने के लिए और फिर मुड़ कर अपनी नर्म बाहों में मैडम ने मुझको जकड़ लिया और एक ज़ोर की जफ़्फ़ी और हॉट किस उसने मेरे होटों पर जड़ दी और फिर वो वहाँ से चली गई ।

अब मैदान साफ़ था तो मैं चुपके से साथ वाले केबिन में दरवाज़ा खटका कर अंदर घुस गया । दोनों शमाएँ जलने जलाने के लिए तैयार बैठी थी, मैंने अंदर घुस कर केबिन का दरवाज़ा लॉक कर दिया ।

फिर वही सिलसिला किसिंग और गर्म गर्म जफ़्फ़ियों का शुरू हो गया लेकिन मैंने अब ज़्यादा समय ना गंवाते हुए थोड़ी जल्दी शुरू कर दी और शमा की सलवार खोलने लगा तो रूबी मेरी पैंट को उतारने में लग गई ।

मैंने उनको कहा- कभी भी किसी के आ जाने का काफी खतरा है यहाँ, तो कम से कम कपड़े उतारे जाएँगे ताकि कोई आ जाये तो वापस पहनने में कोई दिक्कत न हो।

दोनों ने सर हिला कर हामी भर दी और रूबी जो मेरी पैंट खोल रही थी और जैसे ही वो मेरे अंडरवियर तक पहुँची तो वहाँ कच्छे में टेंट बना देख कर हंस पड़ी और शमा को बुला कर उसको भी हैरत से दिखाने लगी।

शमा ने नीचे झक कर मेरे कच्छे को नीचे किया तो लंडम लाल एकदम उन्मुक्त होकर हवा में लहलहाने लगे।

शमा ने झट से लंड को मुंह में ले लिया और रूबी मेरे अंडकोष को चूमने लगी और मेरा भी हाथ खाली न रह कर शमा की बालों भरी चूत को टटोलने लगा।

फिर मेरा दूसरा हाथ शमा के गोल गोल मुम्मों के ऊपर चला गया वो अभी भी कमीज से ढके हुए थे।

रूबी ने शमा की कमीज और ब्रा को ऊपर कर दिया जिससे उसके गोल और सॉलिड मुम्मे मेरे सामने आ गए, मैंने अपना मुंह उसके मुम्मों को चूसने को लगा दिया और दूसरे हाथ से रूबी की चूत को सहलाने के लिए लगा दिया और वो एकदम लबालब पानी से भरी हुई थी। दोनों ही शायद चुदाई के बारे में सोच सोच कर बहुत ही ज्यादा गर्म हो चुकी थी और उन दोनों की चूत लपालप लंड लेने की इंतज़ार में थी।

यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !

मैं ने शमा को ऊपर किया और उसके कान में कहा- शमा जी आपकी शमा जलाएँ क्या ?

शमा बोली- हज़ूर, वो तो आपके लंड को देख कर ही जल रही है सो जल्दी से अपनी जलती हुई मशाल को शमा के हवाले कीजिये सरकार मेरी।

मैं बोला- पेश है मशाल जो जलती रहे रात दिन !

यह कह कर मैंने उसको उल्टा खड़ा किया और उसके दोनों हाथ सीट पर रख कर पीछे से लंड का निशाना साधा और एक धक्के में अपने लम्बे और मोटे लंड को शमा की चूत में

डाल कर उसके अंदर की शमा को रोशन करने लगा ।

रूबी भी अब अपनी कमीज और ब्रा ऊपर कर के अपने मस्त गुब्बारों को उड़ने ले लिए आज़ाद करने लगी । उसके उरोज भी अलमस्त और मदमस्त थे, देखते ही शराब का नशा सा आ गया आँखों में और चूचियों को सहला कर दोनों को मरहबा कहा मन ही मन ! उसकी गांड पर हाथ फेरते हुए मन ही मन कहा- माशाल्ल्लाह क्या लुत्फ़ अन्दोज़ चीज़ें हैं यह दोनों उभरे हुए गोल गुंबद !

और शमा शायद मन ही मन कह रही थी- वाह क्या मीनारे कुतब शाही है इसका लौड़ा । लम्बा और मोटा तो है ही और क्या तपते लोहे की सलाख है यह जौनपुरी केला जो खाए वो भी पछताए और जो ना खाए वो कभी ना समझ पाये ।

शमा की चूत में अब काफी हलचल थी वो खुद आगे पीछे हो कर चुदाई की स्पीड को कंट्रोल कर रही थी और जब उसने इस काम में तेज़ी दिखाई तो मैं समझ गया कि यह किला फ़तेह होने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा और मैंने अपना दायाँ हाथ उसकी चूत के अंदर उसकी भग मसलने की ड्यूटी पर लगा दिया ।

ऐसा करते ही शमा की उछल कूद और तेज़ हो गई और वो आँखें बंद करके फुसफुसा रही थी- मार डालोगे क्या... उफ़ मैं गई रे...

फिर उसके धक्के एकदम तेज़ दर तेज़ हो गये और कुछ मिन्ट में वो थोड़ी से कांपी और सीट के ऊपर लुढ़क गई और मैंने अपनी तरफ से इनामी धक्के मारे उसको सीट पर लिटा कर और फिर मैं उसकी चूत से अपने गीले लौड़े को निकाल कर रूबी की चूत को दूँढने लगा ।

रूबी यह तमाशा देख कर अपनी चूत में से निकलती आग को अपनी ऊँगली से बुझाने की कोशिश कर रही थी और अब मेरे लौड़े को आज़ाद देख कर वो लपक पड़ी और वैसे ही सीट पर झुक कर खड़ी हो गई और मेरे अग्नि बाण का इंतज़ार करने लगी ।

मैंने अपने शमा की चूत के पानी से लबरेज़ हुए लौड़े को रूबी की चूत के मुंह पर रख कर अंदर धकेल दिया और एक ही झटके में पूरा जब अंदर चला गया तो रूबी उछल पड़ी और ज़ोर से चिला पड़ी- उईईइ माआ मर गई रे!

लेकिन साथ ही बड़ी मोहब्बत से उसने पीछे मुड़ कर मेरी तरफ देखा और हल्के से मुस्करा दी और मेरे दिल ने कहा- मर जावां गुड़ खा के, साली क्या मुस्कराई है, यार वारी जाऊं!

और फिर मैं ने धीरे धीरे धक्के मारने शुरू किये, पूरा अंदर फिर पूरा बाहर, सिर्फ लंड की टिप अंदर, और फिर ज़ोरदार धक्का अंदर, बारम्बार ऐसा करने से गिर जाती हैं बड़ी बड़ी शहसवार बेगमें और गुलामी कबूल कर लेती हैं खूबसूरत हूरें।

मैंने महसूस किया कि रूबी ज्यादा आनन्द ले रही थी चुदाई का और बार बार मुड़ कर आँखों ही आँखों से शुक्रिया अदा कर रही थी।

मैं भी रूबी की हलीमी का कायल हो गया और इस कोशिश में लग गया कि इसको ज्यादा से ज्यादा लुत्फ़ अन्दोज़ करवाऊंगा।

मैं भी अब पूरी तरह से मस्त होकर चुदाई में लग गया और उसके गोल और सख्त चूतड़ों को सहलाने लगा और उसकी गांड में भी हल्की सी ऊंगली डाल दी और उसने फिर मुड़ कर एक प्यार भरी नज़र से देखा जैसे कह रही हो करते रहो गांड में भी ऐसा ही!

उधर शमा सीट पर पूरी पसर गई थी और उसकी खुली सलवार के अंदर से उसकी फूली हुई चूत के दर्शन हो रहे थे और उसमें से अभी भी थोड़ा थोड़ा रस निकल रहा था जो उसकी चूत का था और वो टप टप उसकी सलवार में गिर रहा था।

अब रूबी ने अपने चूतड़ों से इशारा किया कि तेज़ चुदाई करूँ, मैंने कमर कस के धक्कों की स्पीड धीरे धीरे तेज़ कर दी और उसकी चूत में ऊंगली डाल कर महसूस किया कि वो छूटने से ज्यादा दूर नहीं है।

मेरी तेज़ स्पीड के आगे रूबी अब अधिक देर टिक ना सकी और हाय हाय करती हुई बहुत

ज्यादा पानी छोड़ती हुई एक सिहरन होने लगी उसके शरीर में !

मैं अब ट्रेन के फर्श पर बैठ गया और उसके नितम्बों को चूमने और चाटने लगा जिससे उसको बड़ा मज़ा आ रहा था ।

अब मैं लेटी हुई शमा के गोल मुम्मों को जीभ से चाटने लगा और उसकी चूचियों का रसपान करने लगा ।

शमा ने मुझको एक बहुत ही गहरी जफ़्फ़ी डाल दी और मेरे लबों को चूमने लगी, मैं भी उसके अधरों को जीभ से चूसने लगा ।

अब दोनों थोड़ी संयत हो गई थी और अपने कपड़े ठीक कर रही थी, मैं भी अपनी पैंट वगैरह ठीक कर रहा था ।

फिर मैंने उन दोनों को गुड नाईट कहा और जाने लगा तो शमा बोली- अब फिर कब होगी मुलाकात हम दोनों के सरताज ?

मैंने भी उसी लहजे में जवाब दिया- जब आप चाहो बेगमाते-ऐ-अवध मैं आपका खाविंद आपकी खिदमत में हाज़िर रहूंगा । आप सिर्फ़ हुक्म नादिरशाही जारी कीजिये, बंदा आप की खिदमत में हाज़िर हो जाएगा ।

यह कह कर मैंने उन दोनों को एक बार चूमा और केबिन का दरवाज़ा खोल कर बाहर आ गया ।

कहानी जारी रहेगी ।

ydkolaveri@gmail.com

